# सर्वांश त्यागी ही श्रेष्ठ भाग्य के अधिकारी

ब्रह्माकुमारिझ

प्रस्तुति

ब्र. कु. प्रफुल्लचंद्र

ॐ ईशा वास्यमिदँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।

भावार्थ - इस वैश्व गति में, इस अत्यन्त गतिशील समष्टि-जगत् में जो भी यह दृश्यमान, गतिशील, वैयक्तिक जगत् है-यह सब के, सब ईश्वर के आवास के लिए है। इस सबके त्याग द्वारा तुझे इसका उपभोग करना चाहिये; किसी भी दूसरे की धन-सम्पत्ति पर ललचाई दृष्टि मत डाल। ... जड़-चेतन प्राणियों वाली यह समस्त सृष्टि परमात्मा से व्याप्त है । मनुष्य इसके पदार्थों का आवश्यकतानुसार भोग करे, परंतु 'यह सब मेरा नहीं है के भाव के साथ'; उनका संग्रह न करे । ॐ ॐ ॐ

---------- ईशोपनिषद्

**तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा**

तुम त्याग भावना पूर्वक भोग करो

No Salvation without Renunciation ----- बिना त्याग मुक्ति नहीं

# त्याग की परिभाषा

त्याग की परिभाषा बड़ी गुह्य है |

त्याग का अर्थ है किसीभी चीज वा बात को छोड़ दिया, अपनेपन से किनारा कर लिया, मतलब  अपना अधिकार समाप्त हुआ | वह आपकी नहीं रही जिसके प्रति त्याग किया वह वस्तु उसकी हो गई |

जिस चीज वा बात का त्याग किया उसका फिर संकल्प भी नहीं कर सकते क्योंकि त्याग की हुई बात, संकल्प द्वारा प्रतिज्ञा की हुई बात वापिस नहीं कर सकते हो |  ३-४-१९८२

# किस किस बात के सर्वांश त्यागी बनाना है?

देहभान – देह अहंकार का त्याग

देह से सम्बंधित सर्व कर्मेन्द्रियों का त्याग

सर्व लौकिक एवं अलौकिक संबंधो का त्याग

सर्व विकारों एवं दुर्गुणों का त्याग

व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म का त्याग

# सर्व प्रथम त्याग देहभान का

- कहने मे तो सब एक बात कह देते है कि तन, मन, धन, सम्बन्ध तेरा, इसमे पहेला शब्द आता है तन, तन का त्याग माना देहाभान का त्याग | इस पुराने देह के भान से विस्मृति अर्थात किनारा | ३-४-१९८२
- हमारी अवनति, दुर्गति एवं शुद्रपन का मूल कारण है देहभान, देह अहंकार, आत्मा की विस्मृत |
- देह अभिमान के त्याग बिना हम अपने स्वरूप में, स्वधर्म में, स्वमान में, स्वलक्ष में स्थित नहीं हो शकते |
- देहभान के त्याग बिना बाबा को भी यथार्त रूप से याद नहीं कर शकते | इसीलिए बाबा हमें बार बार कहते है की अपने को आत्मा समज कर मुझे याद करो |

# दूसरा त्याग देह की कर्मेन्द्रियों के आकर्षण का त्याग

- घर का त्याग अर्थात घर के साथ सम्बंधित सभी सामग्री (सामान) का भी त्याग | ऐसे इस देह रूपी घर में भिन्न भिन्न कर्मेन्द्रियाँ सामग्री है |
- इसीलिए यदि कोई भी कर्मेन्द्रिय आकर्षित करती है तो उसको सम्पूर्ण त्याग कहेंगे? अपनी चेकिंग करो अलबेले मत बनो| इस पुरानी देह को बाप द्वारा मिली हुई अमानत समझो | ३-४-१९८२
- विशेष रूप से हमें चेक करना है की हमारी आँख, जिभ, कान, मुख से हम कही धोखा तो नहीं खा रहे है |
- मन, बुध्धि सहित हमारी पांचो कर्मेन्द्रियाँ एवं पांचो ज्ञानेद्रियाँ को श्रीमत अनुसार, अपने नियंत्रण में रख, हम चला रहे है?

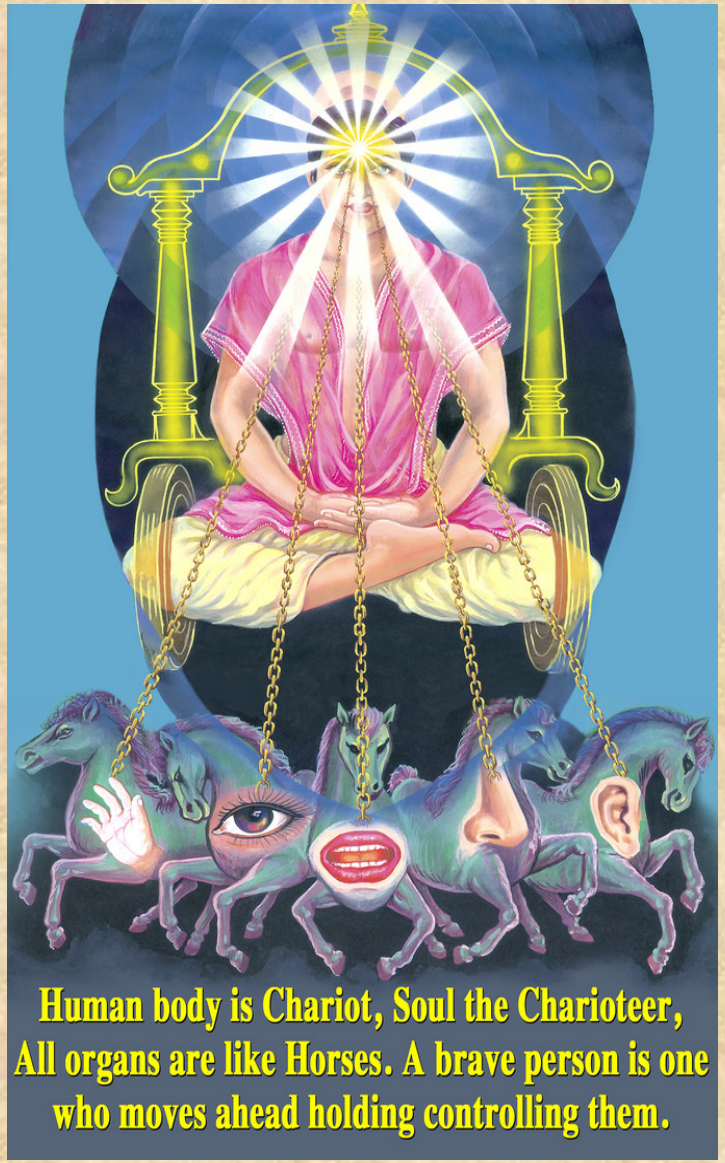

Human body is Chariot, Soul the Charioteer, All organs are like Horses. A brave person is one who moves ahead holding controlling them.

# तीसरा त्याग देहके संबंधो का त्याग

- देह के साथ व्यक्तिओं के संबंधो का भी त्याग | इसमे लौकिक और अलौकिक दोनों सम्बन्ध आते है | दोनों सम्बंधो मे महात्यागी अर्थात नष्टोमोहा बनना है |
- नष्टोमोहा अर्थात दोनों सम्बंधो मे न किसीसे धृणा न किसीसे लगाव वा झुकाव| विश्व की सर्व आत्माओं प्रति समत्व का बंधुत्व का भाव|
- महात्यागी अर्थात महादानी वरदानी |
- महादानी अर्थात मिले हुए खजाने बिना स्वार्थ के सर्व आत्माओं प्रति देने वाले |
- वरदानी अर्थात सदा स्वयं में गुणों. शक्तिओं और ज्ञान के खजाने से संपन्न आत्मा | सदा सर्व आत्माओं प्रति श्रेष्ठ और शुभ भावना तथा सर्व का कल्याण हो ऐसी श्रेष्ठ कामना रखनेवाली सदा रूहानी, रहमदिल, फराकदिल आत्मा | ८-४-१९८२

# विकारों, दुर्गुणों, बुरी आदतों और व्यर्थ का त्याग

- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का त्याग
- इर्षा, द्वेष, धृणा, स्वार्थ, भय, बदले की भावना का त्याग
- किसी भी प्रकार का व्यसन का त्याग
- आलस्य और अल्बेलेपन का त्याग
- व्यर्थ संकल्प, बोल और कर्म का त्याग
- समय और धन को व्यर्थ गवाने का त्याग

# त्याग का भाग्य पदमगुणा

- एक गुणा त्याग उसके रिटर्न में पदम् गुणा भाग्य मिलाता है |

  शुद्र जीवन त्याग दी, ब्रह्मकुमार –कुमारी बने वो भी त्याग है, जिसका भाग्य श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन है |
- त्याग भी नंबरवार है इसीलिए भाग्य पाने मे भी नम्बरवार है |

  श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खिचाने का आधार है श्रेष्ठ संकल्प और श्रेष्ठ कर्म |
- चाहे समर्पित सेवाधारी आत्मा हो चाहे ट्रस्टी आत्मा हो इस आधार पर दोनों को ऑथोरिटी है भाग्य बनाने की
- एक है नामधारी बन कर सेवा करने वाले दुसरे है सेवाधारी बन सेवा करने वाले,
- एक है लगन से सेवा करने वाले दुसरे है डयूटी के प्रमाण सेवा करने वाले

  १-४-१९८२

# त्याग का भाग्य बेशुमार

## संगमयुग का भाग्य:-

- हीरे सामान एवं कमल पुष्प समान पवित्र ब्राह्मण जीवन
- परमात्मा के साथ सर्व संबंधो की अलौकिक अनुभूति
- अतीन्द्रिय सुख एवं आनद की अनुभूति
- मास्टर त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिमूर्ति, त्रिलोकीनाथ बनते है
- विकारों रूपी रावण पर विजय और विकर्माका विनाश
- दिव्या गुणों से एवं दिव्य शक्तिओं से संपन्न जीवन

## सतयुग का भाग्य:-

- १६ कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी जीवन
- दिव्या गुणों से संपन्न जीवन
- सुख, शांति, आनंद, प्रेम संपन्न जीवन
- रोग, शोक, चिंता, भय, दुःख अशांति से मुक्त जीवन
- सर्व प्रकार की समृध्धि से संपन्न जीवन

# तिन प्रकार के त्यागी बच्चे

## १. त्यागी २. महात्यागी ३. सर्वांशत्यागी

**त्यागी:**

- त्यागी तो बने है लेकिन सम्पूर्ण त्यागी बनने में दो प्रकार के विघ्न उनको आगे बढ़ने नहीं देते | १. त्याग करने में जो विघ्न आते है उसका सामना करने की शक्ति एवं हिम्मत कम है २. अलबेलापन
- पढ़ाई, याद, धारणा और सेवा सब सब्जेक्ट में चल तो रहे है लेकिन आराम से
- सम्पूर्ण परिवर्तन करने के लिए शस्त्रधारी शक्ति स्वरूप की कमी हो जाती है | स्नेही है लेकिन शक्ति स्वरूप नहीं
- मास्टर सर्वशक्तिवान स्वरूप में स्थित नहीं हो शकते इसलिए महात्यागी नहीं बन शकते | यह है त्यागी आत्मा |

# महात्यागी:

- सदा सम्बन्ध, संकल्प, संस्कार सभी के परिवर्तन करने के सदा हिम्मत और उल्लास में रहते है |
- पुरानी दुनिया, पुराने सम्बन्ध से सदा न्यारे | महात्यागी आत्मा सदा यह अनुभव कराती है की यह पुरानी दुनिया और सम्बन्धी मरे ही पड़े है|
- इसलिए उनको युध्ध नहीं करनी पड़ती, सदा स्नेही सहयोगी , सेवाधारी, शक्ति स्वरूप में स्थित रहते है|
- लौकिक जंजीर को छोड़ दी लेकिन सोनेकी जंजीर में बंध जाते है | सोने की जंजीर है में और मेरा |

## सर्वांश त्यागी:

- जिसने में और मेरेपन का अंश-वंश सहित त्याग किया है
- जिस की चलन चहरे से वो दिखाई न दे लेकिन बाप दिखाई दे
- वो सबको आप प्रेमी नहीं लेकीन बाप प्रेमी बनाएगा
- जिसने *त्याग का भी त्याग किया* है और *त्याग के भाग्य का भी त्याग* किया है

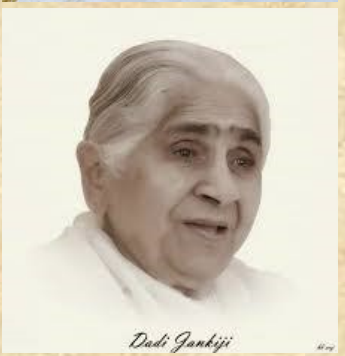

# ॐ शांति

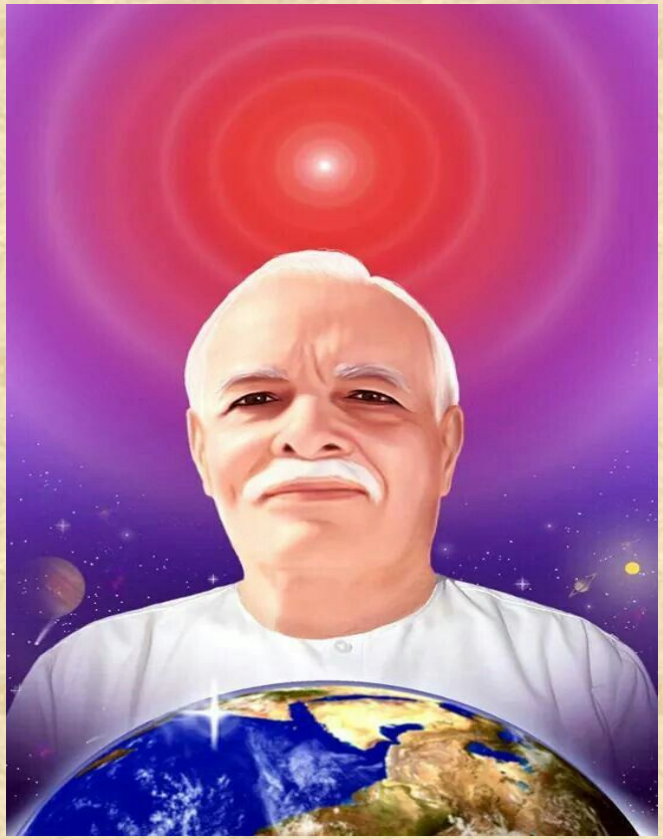

# धन्यवाद